ओ३म्

आर्य्य ट्रैक्ट माला

सम्पादक

श्री पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम. ए.

[प्रणेता:—आस्तिकवाद, विधवा विवाह मीमांसा, आर्य्य-समाज, सर्वसिद्धान्त संग्रह, अंग्रेज़ जाति का इतिहास, हिन्दी शेक्सपियर (छः भाग), अद्वैतवाद, धर्म्म-पद, महिला व्यवहार चन्द्रिका, आदि आदि]

—o—

प्रकाशक

ट्रैक्ट-विभाग

आर्य्य समाज चौक, प्रयाग

[शिवरात्रि १९८४]

इसी

शिवरात्रि

पर

परमेश्वर की असीम कृपा और भगवान् दयानन्द की विशेष अनुकम्पा से श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० द्वारा सम्पादित माला का **५० वां ट्रैक्ट** निकल रहा है (द्वितीय माला के १७ ट्रैक्टों के अतिरिक्त)। इन ट्रैक्टों की ९ लाख २१ हज़ार प्रतियां छप चुकी हैं।

इस पवित्र कार्य्य में सम्पादक और आर्य्य-समाज प्रयाग का एक मात्र यही स्वार्थ है कि ऋषि का संदेश प्रत्येक के पास पहुँच जाय। ट्रैक्ट लागत मात्र पर ही दिये जाते हैं आशा है कि आप सब महानुभाव इस ट्रैक्ट माला को अपनावेंगे।

मिलने का पता :—

ट्रैक्ट विभाग, आर्य्यसमाज चौक, प्रयाग।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम. ए.,

ओ३म्

ट्रैक्टों की धूम

ऋषि के उद्देश्य की पूर्ति

हिन्दी भाषा में उत्तम ट्रैक्टों की बहुत कमी थी और इसका अनुभव बहुत दिनों से आर्य्य-सामाजिक प्रेमी कर रहे थे। आर्य्य-समाज के मंत्री ट्रैक्टों का वितरण करना चाहते थे पर उत्तम तथा सस्ते ट्रैक्ट मिलना आसान काम नहीं था। पांच वर्ष हुए अनेकों महानुभावों के विशेष आग्रह पर आर्य्य साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम.ए. ने एक ट्रैक्टों का सिलसिला निकालना आरम्भ कर दियाथा। प्रत्येक मास में एक ट्रैक्ट का औसत पड़ जाता था। इस प्रकार से इस समय तक ५० ट्रैक्ट प्रथममाला और १७ द्वितीय माला के निकल पाये हैं। हमारे ट्रैक्टों का प्रचार भी बहुत हुआ जिसका अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि ५ वर्ष में ६ लाख २१ हज़ार प्रतियां छप गईं। भारतवर्ष का कोई भी कोना ऐसा नहीं बचा है जहां कि हमारे ट्रैक्ट न जाते हों। इनमें से कुछ ट्रैक्टों का अनुवाद तामिल भाषा में भी हो चुका है। कलकत्ते से कई ट्रैक्ट बंगला भाषा में

निकाले गये हैं। छः ट्रैक्टों का उर्दू अनुवाद हमारे यहां से मिल सकता है। चार ट्रैक्टों के मराठी संस्करण भी हमने प्रकाशित कर दिये हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ट्रैक्टों की प्रशंसा श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज और महात्मा हंसराजजी आदि महानुभावों ने की है।

ट्रैक्ट सरल भाषा में लिखे गये हैं जिससे सभी इनको समझ लें। एक विषय पर एक ही ट्रैक्ट और एक ट्रैक्ट में एक ही विषय का प्रतिपादन किया गया है। प्रथम माला के टाइटिल पर श्रीस्वामी दयानन्दजी की एक सूक्ति और तथा चित्र भी दिया गया है।

प्रचार किस प्रकार हो ?

(१) आर्य्यसमाज के मंत्रियों को चाहिये कि वार्षिकोत्सव तथा अन्य अवसरों पर मुफ़्त बाँटें।

(२) धनी पुरुषों को मेलों पर बाँटना चाहिये।

(३) अध्यापकों को उचित है कि लड़कों को ट्रैक्ट ख़रिदवा कर पढ़ा दें।

(४) जो व्याख्यान देना सीखना चाहते हैं वे इसको आधार बना कर व्याख्यानदाता बन सकते हैं।

(५) ऐसे लोगों को ट्रैक्ट बांटे जायें जो पूरे आर्य्य सामाजिक नहीं हैं। वे इनको पढ़ कर आर्य्य हो जावगे।

[मुख पृष्ठ (Title page) का नमूना]

(प्रथम माला) ओ३म् (ट्रैक्ट सं० ११)

हमारा संगठन

आपस की फूट से कौरव पांडव और यादव का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह

वेदोक्त सत्यसनातन धर्मोद्धारक
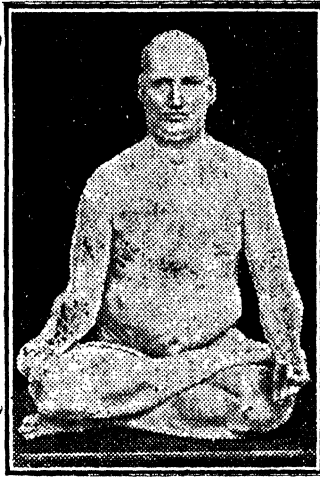
श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती

भयंकर राक्षस कभी छूटेगा व आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

सम्पादक

गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम. ए.

प्रकाशक

आर्यसमाज चौक प्रयाग।

जनवरी १९२८। अब तक ६ लाख २१ हज़ार ट्रैक्ट छप चुके।

पृष्ठ १६]

प्रथम माला

[मूल्य)॥ प्रति या २) सैकड़ा

१. ईश्वर और उसकी पूजा—इस ट्रैक्ट में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव तथा उसकी उपासना की वास्तविक विधि दर्शायी गई है।

२. हमारे बच्चों की शिक्षा—बालकों को शिक्षित सदाचारी और देशोपयोगी किस प्रकार बनाया जा सकता है यह इस ट्रैक्ट में वर्णित है।

३. प्राचीन आर्य्यावर्त्त—भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता का चित्र इसमें भली प्रकार अंकित किया गया है। इस ट्रैक्ट के पढ़ने से यह भी पता चल सकता है कि किन कारणों से भारत वर्त्तमान अधोगति को प्राप्त हुआ है।

४. हमारे धर्म-शास्त्र—वैदिक धर्म के माननीय और विश्वसनीय ग्रन्थों का इसमें वर्णन है।

५. हमारा धर्म—वास्तविक धर्म क्या है, यह इस ट्रैक्ट के पढ़ने से पता चल सकता है। झूठ मूठ के मतमतान्तर और पाखण्डों से बचने का उपदेश इसमें किया गया है।

६. घर की देवी—स्त्री-शिक्षा-विषयक वर्णन इस ट्रैक्ट में है। स्त्रियों की शिक्षा के बिना घर में शान्ति कभी नहीं स्थापित हो सकती है।

७. राजा और प्रजा—इस ट्रैक्ट में राजा, प्रजा, राज-सभा, मन्त्री, न्यायाधीश आदि के कर्तव्यों का वर्णन है।

८. हमारी देश सेवा—आर्य्य-समाज ने देश की जो सेवायें की हैं वह सब इस ट्रैक्ट के पढ़ने से ज्ञात हो सकती हैं। अछूतोद्धार, शुद्धि, शिक्षा सम्बन्धी, अनाथालय आदि विषय सभी सेवायें इसमें अँकित है।

९. हमारे बिछुड़े भाई—जो हिन्दू किसी समय में मुसलमान हो गये और अब फिर वैदिक धर्म ग्रहण करना चाहते हैं, उनकी शुद्धि का विवरण इसमें दिया गया है।

१०. सच्ची बात—झूठे पाखंडी साधुओं, और फकीरों से बचने का आदेश इसमें किया गया है।

११. हमारा संगठन—हिन्दुओं का संगठन किस प्रकार किया जा सकता है और मुर्दा हिन्दू जाति किस प्रकार बलवती बनाई जा सकती है, यह इस ट्रैक्ट के पढ़ने से ज्ञात हो सकता है।

१२. मुसलमानी मत की आलोचना—इसमें कुरान की आयतों को देकर और उनका खंडन कर के दिखाया गया है कि वैदिक धर्म मुसलमानी धर्म की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

१३. रामभक्ति का रहस्य—इस ट्रैक्ट में श्री मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के जीवन से जो उपदेश मिल सकते हैं वे दिखाये गये हैं।

१४. हमारे स्वामी—युग प्रवर्त्तक, आर्य्य-समाज के

संस्थापक प्रातः स्मरणीय देशोद्धारक श्री १०८, महर्षि दयानन्द सरस्वती के पवित्र जीवन का वर्णन इसमें किया गया है।

१५. **ईसाई मत की आलोचना**—इसमें ईसाई मत और बाइबिल का खंडन किया गया है।

१६. **कुम्भ माहात्म्य**—इसमें मेलों की वर्त्तमान शोचनीय परिस्थिति और उसके सुधार का वर्णन किया गया है।

१७. **देवी देवता**—इसमें देवता शब्द का वास्तविक अर्थ बता कर यह दिखलाया गया है कि किन किन देवताओं का किस प्रकार आदर और सम्मान किया जा सकता है। वर्त्तमान प्रचलित मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया गया है।

१८. **धार्मिक भूलभुलइयां**—पाखंडी धर्मों और लोगों के कपट जाल से बचने के उपाय इसमें दिये गये हैं।

१९. **ज़िंदा लाश**—इसमें दिखाया गया है कि बाल-विधवा विवाह शास्त्र अनुकूल है। विधवाओं की दुर्दशा का करुणाजनक चित्र सुन्दर कविता द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

२०. **हमारा भोजन**—इसमें मांस, नशा आदि के सेवन के दोष दिखा कर सिद्ध किया गया है कि मनुष्य को फल-मूल अन्न पर जीवन व्यतीत करना चाहिये न कि मांस आदि पर।

२१. **अछूतोद्धार**—अछूतों की दयनीय दशा का चित्र इसमें खींचा गया है। यह भी दिखाया गया है कि अछूत

जाति के प्रति अन्यों का क्या कर्त्तव्य है और इनकी उन्नति किस प्रकार हो सकती है।

२२. **वैदिक सन्ध्या**—इसमें सन्ध्या के मंत्र अर्थ सहित दिये गये हैं। संध्या करने की विधि भी स्पष्ट रूप से दी गई है।

२३. **हवन विधि**—इसमें हवन मन्त्र अर्थ सहित दिये गये हैं। हवन करने की विधि भी सरल रूप से दी हुई है।

२४. **प्रार्थना भजन**—ईश्वर की प्रार्थना करने योग्य सुन्दर भजन इसमें दिये हुए हैं। ये भजन मिल कर गाने योग्य भी हैं। समाजों में यही भजन गाये जाने चाहिये।

२५. **वैदिक प्रार्थना**—इसमें वेद के सुन्दर उपयोगी मंत्रों को अर्थ सहित दिया गया है जिनके द्वारा ईश्वर से भिन्न भिन्न अवसरों पर प्रार्थना की जा सकती है।

२६. **वेदोपदेश**—इसमें वेद के कुछ अमूल्य, उपयोगी मंत्र अर्थ सहित दिये गये हैं जिनके उपदेशानुसार सब को अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये।

२७. **मूर्ति पूजा**—इसमें दिखाया गया है कि ईश्वरकी उपासना मूर्ति पूजा द्वारा नहीं की जा सकती है। मूर्ति पूजा से देश को बड़ी हानि हुई है।

२८. **अवतार**—इस ट्रैक्ट में यह दिखाया गया है ईश्वर के अवतार का सिद्धान्त सर्वथा मिथ्या हानि कारक और अवैदिक है।

२९. **आर्य्य-समाज क्या है?**—इसमें आर्य्य समाज

के नियम, मोटे मोटे सिद्धान्त और उपयोगी कार्यों का वर्णन किया गया है।

३०. जीव रक्षा-इसमें दिखलाया गया है कि भिन्न २ प्राणियों को किस प्रकार सताया जा रहा है। और जीवों की इससे किस प्रकार रक्षा हो सकती है।

३१. नशा-इसमें मादक द्रव्यों, शराब, अफीम, गाँजा चरस आदि नशों के उपयोग का निषेध किया गया है।

३२. अछूतों का प्रश्न-अछूतोद्धार सम्बन्धी यह उपयोगी ट्रैक्ट है।

३३. ब्रह्मचर्य्य-इसमें ब्रह्मचर्य्य व्रत के पालन के नियमों और उसकी उपयोगिता का वर्णन है।

३४. हमारा बनाने वाला--इसमें नास्तिकता का खंडन करके सिद्ध किया गया है कि सब संसार को रचने वाली एक चैतन्य शक्ति है जिसे ईश्वर कहते हैं।

३५. संस्कार--इसमें षोडश संस्कारों की उपयोगिता का वर्णन किया गया है और दिखाया गया है कि ये मनुष्य जीवन के लिये कितने आवश्यक हैं।

३६. आनन्द का स्रोत-इस ट्रैक्ट में दिखाया गया है कि जीवन किस प्रकार आनन्द और सुखमय बन सकता है।

३७. हिन्दुओं के साथ विश्वासघात-इसमें दिखाया गया है कि आर्य्य-समाज हिन्दुओं का हितैषी है न कि इनका शत्रु।

३८. **स्वामी दयानन्द की दो भारी भूलें**--इसमें स्वामी जी ने हिन्दू जाति के उद्धार के लिये जो काम किये उनमें से दो मुख्य कार्य्यों का वर्णन है।

३९. **हिन्दू जाति का भयंकर भ्रम**—हिन्दू जाति की वर्तमान परिस्थिति पर इस ट्रैक्ट में भली प्रकार प्रकाश डाला गया है।

४०. **मुसलमानों के सोचने योग्य बातें**—इसमें मुसलमानी धर्म के दोषों का वर्णन है।

४१. **कलियुग**--इसमें कलियुग के झूठे डर का निषेध किया गया है और दिखाया गया है कि देश के पतनोत्थान का कारण कलियुग या सतयुग नहीं होते।

४२. **ग्रहण**--चन्द्रग्रहण और सूर्य्यग्रहण के सम्बन्ध में जो मिथ्या कल्पनायें, पूजा पाठ आदि कुरीतियां प्रचलित हो गई हैं उनका निषेध किया गया है।

४३. **साधु सन्यासी**—इसमें वर्त्तमान साधुओं के दोष और वास्तविक साधुओं का महत्व दिखाया गया है।

४४. **जीव क्या है**--नाम ही से पता चल जायगा कि इस ट्रैक्ट में क्या होगा। वैदिक मत 'जीव' को क्यों मानता है इसमें दर्शाया गया है।

४५. **गुरु माहात्म्य**--गुरुडम की प्रथा भारतवर्ष में बहुत दिनों से प्रचलित है। लोग गुरु को ही ईश्वर से अधिक

समझ कर जो वह कहता है बिना विचार किये करने लगते हैं। इस प्रथा के दोषों का दिग्दर्शन इसमें कराया गया है।

४६. **पुनर्जन्म**--जीव दुबारा जन्म लेता है या नहीं इसी बात का प्रतिपादन किया गया है। युक्तियां तथा वेदों के नवीन प्रमाण पुनर्जन्म की पुष्टि में दिये गये हैं।

४७. **अद्भुत चमत्कार (मोजज़ो)**—लोग बहुत सी मनगढ़न्त बातों में विश्वास करते हैं। अमुक ने पृथ्वी निगल ली, चांद के टुकड़े २ कर लिये, आदि असम्भव बातों में विश्वास रखने वालों को इसे अवश्य ही पढ़ना चाहिये।

४८. **पितृ यज्ञ**—सच्चे पितृ-यज्ञ का इसमें वर्णन किया गया है। लोग जीवित माता पिता की सेवा न करके उनकी मृत्यु पर अज्ञानवश श्राद्ध करने लगते हैं।

४९. **लोग क्या कहते हैं**—स्वामी दयानन्द के विषय में अन्य धर्मावलम्बियों तथा बड़े आदमियों के क्या विचार हैं, उन्ही का संग्रह किया गया है।

५०. **स्वामी दयानन्द को सूक्तियां**--महर्षि दयानन्द की दिल में चुभने वाली सूक्तियों का यह संग्रह है।

पृष्ठ ८]

द्वितीयमाला

[मूल्य)। प्रति या १) सैकड़ा

१. मौलवी साहब और जगतसिंह—इसमें संवाद रूप से मुसलमानी मत का खंडन और शुद्धि का प्रतिपादन किया गया है।

२. पादरी साहब से बचो—इसमें संवाद द्वारा ईसाई मत की आलोचना मनोरञ्जक रीति में की गई है।

३. हिन्दू स्त्रियों की लूट का कारण—इसमें दिखलाया गया है कि किन कारणों से मुसलमान गुन्डे हिन्दू स्त्रियों को अपने फन्दे में फँसा कर उनका धर्म नष्ट कर देते हैं।

४. हिन्दुओ जागो—इसमें हिन्दुओं को चेतावनी दी गई है कि वे अपनी रक्षा करने के लिये शीघ्र उग्र हो जायं

५. हिन्दू धर्म का नाश—हिन्दू धर्म किस प्रकार और क्यों क्षीण होता जा रहा है और उसमें क्या क्या दोष आ गये हैं इसका इसमें वर्णन है।

६. हिन्दू जाति की रक्षा के उपाय—मुसलमानों के आक्रमणों से हिन्दू जाति की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है इसका इसमें वर्णन है।

७. दान की दुर्गति—इस समय हमारी दान देने की प्रथा सर्वथा दूषित हो गई है। इसमें दिखलाया गया है कि किस को दान देने में लाभ है और किसको देने में हानि।

८. **विधवा और देश का नाश**—इसमें बताया गया है कि देशोन्नति में विधवाये कितनी बाधक है। इनका पुनर्विवाह कर देना चाहिये।

९. **दहेज**—दहेज की प्रथा कितनी बुरी और अमानुषिक है और इसके कारण कितनी विपत्तियाँ उठानी पड़ती हैं यह इस ट्रैक्ट में वर्णित है।

१०. **दुःखदायी दुर्व्यसन**—इसमें नाच, फज़ूल ख़र्ची, आदि दुर्व्यसनों का खंडन किया गया है।

११. **मसज़िद के सामने बाजा**—इसमें दिखाया गया है कि मसज़िद के सामने सड़कों पर बाजा बजाना सर्वथा न्याय संगत और प्रथा के अनुकूल है।

१२. **हिन्दू मुसलमानों के मेल का प्रश्न**—इसमें दिखाया गया है कि इन दोनों जातियों के मेल का वास्तविक अर्थ क्या है और यह मेल किस प्रकार सुदृढ़ हो सकता है।

१३. **हिन्दुओं का हिन्दुओं के साथ अन्याय**—हिन्दू ही भूमंडल पर एक जाति है जो कि अपनी जाति के साथ अन्याय करती है। अन्याय को जानने के लिये इसे अवश्य पढ़िये।

१४. **स्वामी श्रद्धानन्द का धर्म बलिदान**—इसमें स्वामी जी के बलिदान का करुणाजनक वृत्तान्त देकर मुसल-मानों की कुटिल नीति का परिचय दिया गया है।

१५. एक नई आफ़त—मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की जो चेष्टा मुसलमान कर रहे हैं उसका वर्णन है।

१६. आदि हिन्दू-सभा क्या है ?—अछूत भाइयों में जो एक नई सभा उठ खड़ी हुई है उसी का इसमें वर्णन है।

१७. आदि हिन्दू कौन है ?—इसमें 'आदि हिन्दू' शब्द की मीमांसा है।

नोटः—दोनों मालाओं के गुटका का मूल्य १।) है।

स्वामी दयानन्द जी महाराज की पुस्तकें

क्रम	पुस्तक			मूल्य
(१)	सत्यार्थ प्रकाश		...	॥=)
(२)	,,		...	१)
(३)	,,	(उर्दू)	...	१॥)
(४)	संस्कार विधि		...	।=)
(५)	ऋग्वेद भाष्य भूमिका		...	१।=)
(६)	गोकरुणानिधि		...	-)॥
(७)	व्यवहार भानु		...	=)॥
(८)	पंचयज्ञ महाविधि		...	-)॥
(९)	काशी शास्त्रार्थ		...	-)
(१०)	आर्य्योद्देश्य रत्न माला		...	)।
(११)	आर्य्य विभिनय	(बड़ा)	...	।-)
(१२)	,,	(गुटका)	...	≡)
(१३)	वेदाङ्ग प्रकाश सम्पूर्ण १४ भाग		...	५॥=)
(१४)	यज्ञ के सामान्य मन्त्र		..	)॥
(१५)	ग्रन्थ संग्रह दो भागों में		...	४)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

क्रम	पुस्तक		मूल्य
(१६)	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश-स्वा० सत्यानन्द कृत		१॥)
(१७)	आस्तिकवाद--पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. कृत	...	२॥)

(१८) दर्शनानन्द ग्रन्थ माला ... १=)

(१९) नवीन जागृति ... ।)

(२०) गृहस्थ आश्रम ... ≡)

(२१) तकिये इस्लाम ... ≡)

(२२) प्राणायाम विधि ... -)॥

(२३) आर्य्य-पथिक लेख राम ... १।)

(२४) वीर सन्यासी श्रद्धानन्द ... १=)

(२५) कुर्आने मज़ीद (हिन्दी में) पं० काली चरण शर्मा पहला भाग ... ॥।)

(२६) बालसत्यार्थ प्रकाश ... ॥=)

(२७) बाल शिक्षा प्रथम भाग स्वामी दर्शनानन्द कृत)॥।

(२८) ,, द्वितीय भाग स्वा अनुभवानन्द -)।

(२९) उपासना योग—(भक्ति मार्ग) ... =)

(३०) पार्वती माई ... ।)

(३१) भीष्म पितामह ... ।=)

(३२) कुरान की छान बीन ... ।-)

(३३) सांख्य दर्शन--पं० तुलसीराम स्वामी ... १।)

(३४) धर्म्म शिक्षा—पं० वंशीधर पाठक ... =)

(३५) शरके वेदाद इस्लाम (उर्दू) ... ।)

(३६) अलार्म बैल अथवा ख़तरे का घण्टा ... =)

(३७) विश्वासघात ... ।)

(३८) भयानक षडयन्त्र ... =)

(३९) चमन इस्लाम की सैर ... ।)

(४०) भक्ति दर्पण (गुटका) ... ॥-)

(४१) आर्य्य धर्मेन्द्र जीवन ... १॥)

(४२) संस्कार चन्द्रिका ... २॥=)

(४३) वीर माता का उपदेश ... ।)

(४४) नित्यकर्म विधि ... -)॥

(४५) सर्वसिद्धान्त संग्रह—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम ए. ... ॥)

(४६) आर्य्य समाज—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ।॥)

(४७) श्रीकृष्ण चरित ... ।=)

(४८) दयानन्द चित्रावलि ... २॥)

(४९) चित्रमय दयानन्द ... १।)

(५०) संस्कार प्रकाश ... १।)

(५१) ब्रह्म विज्ञान—श्रीसत्य प्रकाश एम. एस-सी ... =)
(ईश और श्वेताश्वतर का पद्यानुवाद)

(५२) केन उपनिषद् ... =)

(५३) वीर मातायें ... ।॥)

कविता और भजन की पुस्तकें

(५४) आर्य्य-समाज संकीर्त्तन ... -)।

(५५) पुष्पाञ्जलि—(सचित्र) ... ॥=)

(५६)	पुष्पाञ्जलि—(उर्दू)	...	॥)
(५७)	अमीरस सार	...	≡)
(५८)	पद्य-पयोनिधि–श्री विद्याभूषण 'विभु'	...	॥)
(५९)	सुहराव और रुस्तम ,,	...	।)
(६०)	चित्रकूट-चित्रण ,,	...	।=)
(६१)	संगीत रत्न प्रकाश–पांच भाग पूर्वार्द्ध	...	१–)
(६२)	,, ,, उत्तरार्द्ध	...	१।)
(६३)	,, (उर्दू) पांच भाग	...	१)
(६४)	भजन प्रकाश—पांच भाग	...	१)
(६५)	मुसाफिर भजन संग्रह	...	=)॥
(६६)	आदर्श गीताञ्जलि	...	≡)
(६७)	भजन भास्कर	...	॥)
(६८)	प्रतिबिम्ब—सत्यप्रकाश एम. एस-सी		॥।)

मिलने का पता :—

ट्रैक्ट विभाग, आर्य्य समाज

चौक प्रयाग ।

वैदिक विवाह-विधि

सम्पादक—

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

पं० सत्यव्रत उपाध्याय बी० ए० एल० टी०

साधारण पंडितों को संस्कार विधि से बिना अध्ययन किये संस्कार कराने में कठिनाई पड़ती थी और प्रसंग के मंत्रों को ढूढ़ने के लिये पन्ने उलटने पड़ते थे। इस वैदिक-विवाह-विधि में पहले आवश्यक वस्तुओं की सूची, फिर आहुति इत्यादि के मंत्र क्रमशः दिये गये हैं। यदि एक मंत्र कई बार पढ़ा जाता है तो उसे कई बार लिख दिया गया है। जिससे साधारण से साधारण पंडित भी विवाह करा सकें।

चूंकि बहुधा आर्य-भाइयों को स्वयं विवाह कराना पड़ता है इसलिये प्रत्येक आर्य्य को इसकी एक कापी रखनी चाहिये। हमने बहुत से आर्य्यों के विशेष आग्रह पर इसे तय्यार किया है।

मूल्य पांच आने।

मिलने का पताः—

ट्रैक्ट विभाग,

आर्य्यसमाज चौक प्रयाग।

Printed by Krishna Ram Mehta at the Leader ress, and published by Secretary Arya Samaj Chawk, Allahabad.